श्री वैभव लक्ष्मी व्रतकथा

धन-धान्य, सुख-समृद्धि व ऐश्वर्य-वैभव प्रदान करने वाली
असली प्राचीन चमत्कारी व्रत-कथा पूजन विधान सहित

मनोज पॉकेट बुक्स

॥श्री गणेशाय नमः॥

श्री वैभवलक्ष्मी व्रतकथा

सांसारिक सुख-शांति-वैभव प्रदान करने वाली मां श्री वैभव लक्ष्मी के शास्त्रोक्त व्रत-नियम, व्रत-कथा, चमत्कारी प्रभाव, पूजन विधि, चालीसा, आरती, मां के आठ स्वरूपों व महिमामयी मनोपूरक श्रीयंत्र के चित्रों व माहात्म्य-उद्यापन सहित

मनोज पॉकेट बुक्स

मूल्य: 10/-

दो शब्द

मां के प्रिय भक्तो! इस पुस्तक में वर्णित कथाएं श्रुति पर आधारित हैं। फल आपकी श्रद्धा, विश्वास, एकाग्रता और पावनता पर निर्भर है। इसके लेखन का लक्ष्य व्यापार या धन प्राप्ति नहीं है। आप इस पुस्तक को क्रय कर **'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय'** के उद्देश्य से नि:शुल्क वितरित करें, ताकि आपको अधिकाधिक लाभार्जन हो सके। इसके लिए आप हमें भी सहयोग दें। एक बार प्रेम से बोलें:

'माता श्री वैभव लक्ष्मी की जय'

–प्रकाशक

नक्कालों से सावधान!

मां के भक्तों से विनम्र निवेदन है कि आप जब भी पुस्तक खरीदें तो पुस्तक पर **मनोज पॉकेट बुक्स** लिखा अवश्य देखें, क्योंकि अनेक प्रकाशक इधर-उधर से नकल करके मां की पुस्तकें प्रकाशित कर रहे हैं, जो पूर्ण फलदायी नहीं हैं। वैभव लक्ष्मी व्रत कथा की अपनी श्रद्धा व सामर्थ्यानुसार प्रतियां वितरित अवश्य करें, क्योंकि पुस्तक वितरित करने से मां प्रसन्न होंगी और भक्त को दोहरा लाभ भी प्राप्त होगा। प्रचार हेतु पुस्तक वितरित करने वाले श्रद्धालुजन प्रकाशक से सीधे संपर्क स्थापित करें। हमारा वादा है कि पुस्तकें लागत मूल्य पर ही दी जाएंगी।

मनोज पॉकेट बुक्स

761, मेन रोड, बुराड़ी, दिल्ली-110084
✆ 27619638, 27619639, 9212036444, 27615430
शोरूम: 1673-74, मेन रोड, नई सड़क, दिल्ली-6
✆ 65755767, 9891174741
e-mail: camford@sify.com

हे मातुलक्ष्मी करो कृपा, करो भक्तों के हृदय में वास।
मनोकामना पूरी करो, बेगि हरो सब त्रास॥

व्रत आरंभ करने से पूर्व

भक्तो! यह व्रत वैसे तो शीघ्र फल देने वाला है, किंतु यदि कर्म त्रुटि या भाग्य त्रुटि के कारण व्रत का फल न मिले तो निराश न हों, मां लक्ष्मी पर असीम श्रद्धा रखते हुए दो-तीन माह बाद पुनः व्रत प्रारंभ करना चाहिए तथा जब तक इच्छित फल न मिले, तब तक तपस्या की भांति दो-दो माह के अंतराल में व्रत करते रहना चाहिए। इस बीच पुस्तक में दिए गए चालीसा का नियमित पाठ व वैभवलक्ष्मी का गुणगान करते रहना चाहिए। ऐसा करने से मां लक्ष्मी अवश्य प्रसन्न होंगी और मनवांछित फल देंगी। निम्न विधि द्वारा व्रत करने से मां लक्ष्मी की अनुकंपा प्राप्त होगी, ऐसा विश्वास रखें। मां वैभवलक्ष्मी का व्रत प्रारंभ करने से पूर्व पुस्तक में दिए 'श्री यंत्र' को श्रद्धापूर्वक नमन करें।

यूं तो मां वैभवलक्ष्मी के आठों स्वरूपों को प्रणाम करना चाहिए, किंतु यदि आपने 'श्री यंत्र' को प्रणाम कर लिया तो समझ लें कि मां लक्ष्मी के हर स्वरूप को प्रणाम कर लिया। मां लक्ष्मी के आठ स्वरूप हैं, जिनकी छवि पुस्तक में दी गई हैं। माता का पहला स्वरूप 'धनलक्ष्मी मां' का है, दूसरा स्वरूप 'श्री गजलक्ष्मी मां' का, तीसरा स्वरूप है 'श्री अधिलक्ष्मी मां' का, चौथा स्वरूप है 'श्री विजयलक्ष्मी मां' का, 'श्री ऐश्वर्य लक्ष्मी' मां का पांचवां स्वरूप है, छठा स्वरूप 'श्री वीरलक्ष्मी मां' का है, सातवां स्वरूप 'श्री धान्यलक्ष्मी मां' का है और मां का आठवां स्वरूप है 'श्री संतान लक्ष्मी मां' का। मां के हर स्वरूप या 'श्री यंत्र' को श्रद्धापूर्वक प्रणाम करने के उपरांत आभूषणों की पूजा करते समय निम्नलिखित 'लक्ष्मी स्तवन' का पाठ करें।

या रक्ताम्बुजवासिनी विलसिनी चण्डांशु तेजस्विनी।
या रक्ता रुधिराम्बरा हरिसखी भारती मनोह्लादिनी।।

या रत्नाकरमन्थनात्प्रगटिता विष्णोश्च या गेहिनी।
सा मां पातु मनोरमा भगवती लक्ष्मीश्च पद्मावती॥

अर्थात जो लाल कमल के पुष्प पर विराजमान हैं, जो अतुलनीय कांति वाली हैं, जो महान तेज वाली हैं, जिन्होंने लाल वस्त्र धारण किए हुए हैं, जो भगवान श्री हरि की पत्नी हैं, वह लक्ष्मी मां सबके मन को आनंद देती हैं। जिनका उद्‌भव समुद्र मंथन के समय सागर से हुआ था और जो भगवान विष्णु को अति प्रिय हैं, जो कमल पर विराजमान हैं और जो अतिशय पूजनीय हैं, वही मां लक्ष्मी! मुझ पर प्रसन्न रहें तथा मेरी रक्षा करें।

धनदा कवच

यं बीजं मे शिरः पातु ह्रीं बीजं मे ललाटकम्।
श्री बीजं मे मुखं रकार हृदयेऽवतु।
तिकारं पातु जठरं प्रिकारं पृष्ठतोऽवतु।
ये कारं जंघयोर्युग्म रक्ताकारं पादमूलके।
शीर्षादिपाद पर्यंतं हकारं सर्वतोऽवतु।

उक्त धनदा कवच का नित्य 5 या 7 बार पाठ करने से वैभव लक्ष्मी पाठकर्ता पर दयावान रहती हैं तथा उसके सभी मनोरथ पूर्ण करती हैं।

श्रीयंत्र की महिमा

चमत्कारी विधाओं में यंत्रों को सहज ही सर्वोपरि माना जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि यंत्रपूजा के अभाव में देवता प्रसन्न नहीं होते, तभी कहा भी गया है:

यंत्र मंत्रमय प्रोक्तं मंत्रात्मा दैवतैत हि।
देहात्मनोर्यथा भेदो मंत्र देवतयोस्त्था।।

जिस प्रकार शरीर और आत्मा में कोई भेद नहीं होता, उसी प्रकार यंत्र और देवता में भी कोई अंतर नहीं होता।

समस्त प्रकार के यंत्रों में श्रीयंत्र को राजा माना जा सकता है क्योंकि यह धन की दात्री देवी लक्ष्मी का यंत्र है; और ऐसा मनुष्य तो शायद विरले ही ढूंढ़ने पर मिले, जो धनी होने की इच्छा न रखता हो। इस यंत्र की पूजा करने वाले या धारण करने वाले को ऐसा प्रतीत होता है कि मां लक्ष्मी का वरदहस्त उस पर हर समय बना हुआ है। यह यंत्र निश्चित रूप से अनंत ऐश्वर्य और असीमित लक्ष्मी प्रदायी है, आवश्यक है तो बस इतना कि यंत्र पूजन पूर्ण श्रद्धा, निष्ठा और शास्त्रोक्त विधि-अनुसार किया जाए। जिस प्रकार अमृत से बढ़कर अन्य कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी की कृपा प्राप्ति हेतु श्रीयंत्र की पूजा से बढ़कर अन्य कोई उपाय नहीं।

सामान्यतया किसी भी माह के शुक्लपक्ष में अष्टमी के दिन ब्रह्ममुहूर्त में शय्या त्यागकर, दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होकर शुद्ध-शांत स्थान में पूर्वाभिमुख बैठकर धूप-दीप जलाकर भोजपत्र पर इस यंत्र को लिखना चाहिए। वैसे ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण करवाकर यंत्र स्थापना करना श्रेष्ठ रहता है। यदि भोजपत्र पर लिखना हो तो अनार या तुलसी की कलम से लाल चंदन से लिखें। वैसे इस यंत्र की स्थापना हेतु रविवार और अष्टमी का योग पौष संक्रांति के दिन हो तो सर्वोत्तम माना जाता है।

श्रीयंत्र

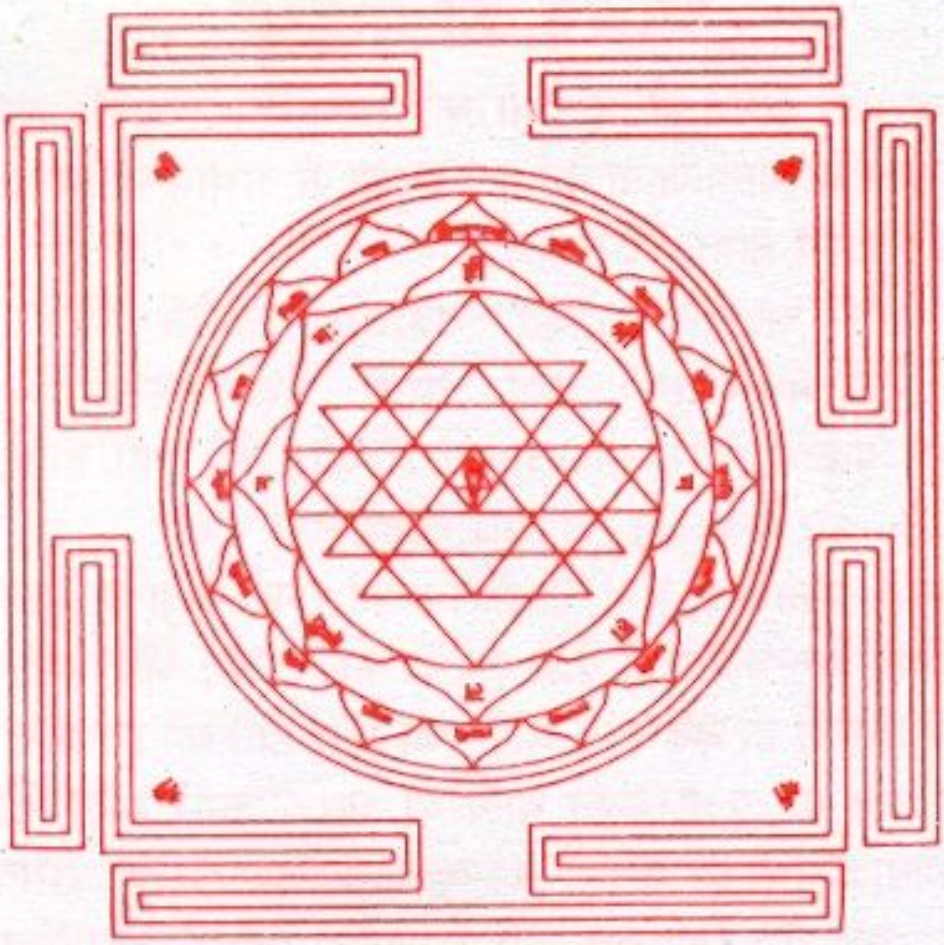

वैभव लक्ष्मी की कृपा प्राप्त कराने वाला,
धन-समृद्धि देने वाला महिमामयी श्रीयंत्र

मां वैभवलक्ष्मी की कृपा प्राप्ति हेतु व्रतकथा प्रारंभ करने से पूर्व इस श्रीयंत्र को प्रणाम कर नमन करना चाहिए। इससे मां वैभवलक्ष्मी शीघ्र प्रसन्न होकर भक्तों की समस्त मंगलकामनाएं पूरी करती हैं।

❑❑

व्रत हेतु विधि-विधान

किसी भी कार्य को विधिपूर्वक संपन्न करने के लिए उसके कुछ नियम होते हैं। इन नियमों का पालन करके प्राणी जटिल-से-जटिल कार्यों में भी सफलता प्राप्त कर लेता है। मां वैभवलक्ष्मी के व्रत को रखने के लिए भी हमारे धर्मगुरुओं ने कुछ नियम निर्धारित कर रखे हैं, जो इस प्रकार हैं:

- यह व्रत शुक्रवार के दिन रखा जाता है। इस व्रत को प्रत्येक श्रद्धालु, कुंआरी कन्या, स्त्री या पुरुष रख सकते हैं।
- यदि पति-पत्नी इस व्रत को मिलकर रखें तो मां लक्ष्मी अति प्रसन्न होती हैं।
- यह व्रत 7, 11, 21, 31, 51, 101 या उससे भी अधिक शुक्रवारों की मन्नत एवं मनोकामना मानकर रखा जा सकता है।
- व्रत हेतु मन एवं विचार शुद्ध होने चाहिए। व्रत करते समय मन में ऐसी स्वार्थ भावना नहीं रहनी चाहिए कि हमें धन प्राप्त करना है या धन की प्राप्ति के लिए ही हम यह व्रत कर रहे हैं, बल्कि मन में हर क्षण यह भावना होनी चाहिए कि हमें मां लक्ष्मी को प्रसन्न करना है। मां वैभवलक्ष्मी की कृपा प्राप्त करनी है।
- मां वैभवलक्ष्मी का व्रत घर पर ही श्रद्धापूर्वक करना चाहिए, किंतु यदि किसी शुक्रवार को आप घर से बाहर हों तो उस शुक्रवार को व्रत स्थगित करके अगले शुक्रवार को करें।
- रजस्वला नारियां भी उन दिनों के शुक्रवार छोड़ सकती हैं। बीमारी की हालत में भी वह शुक्रवार छोड़कर अगले शुक्रवार को व्रत रखें।
- कुल मिलाकर व्रतों की संख्या उतनी होनी चाहिए, जितने शुक्रवारों की आपने मन्नत मानी है।
- अंतिम शुक्रवार को विधिपूर्वक मां वैभवलक्ष्मी के व्रत का उद्यापन करना चाहिए।

श्री गजलक्ष्मी

हे मां गजलक्ष्मी! आप अपने भक्तों की पूजा-अर्चना से प्रसन्न होकर उनकी सभी मंगलकामनाएं पूर्ण करें।

- व्रत संपूर्ण हो जाने पर लक्ष्मी पूजन के उपरांत श्रद्धापूर्वक सात कन्याओं को भोजन कराना चाहिए।
- व्रत की संपूर्णता पर उद्यापन के उपरांत अपनी श्रद्धानुसार मां वैभवलक्ष्मी व्रतकथा की 11, 21, 31, 51, 101, 501 या अधिक पुस्तकें अपने आस-पड़ोस, मित्रों व संबंधियों में बांटनी चाहिए।

जिस शुक्रवार से व्रत रखने प्रारंभ करें, उस शुक्रवार को सुबह सूर्योदय से पूर्व उठकर नित्य क्रियाओं से निवृत्त होने के पश्चात स्नान आदि कर स्वच्छ वस्त्र धारण करें, तब व्रत की तैयारी आरंभ करें। इस बीच कार्य करते समय निरंतर 'जय मां वैभवलक्ष्मी' का जाप करते रहें।

व्रतकथा प्रारंभ करने से पूर्व एक चौकी (एटरे) पर चावल की एक छोटी-सी ढेरी बनाकर उस पर पानी से भरा तांबे का कलश स्थापित करें। उस पर कटोरी रखनी चाहिए; उसी कटोरी में सोने-चांदी की कोई वस्तु (आभूषण आदि) या चांदी का रुपया रखना चाहिए। शुद्ध घी का दीपक तथा अगरबत्ती जलाएं। तत्पश्चात मां के सभी स्वरूपों व 'श्रीयंत्र' को श्रद्धापूर्वक प्रणाम करना चाहिए। ऐसा करने से व्रत करने वाले प्राणी से मां वैभवलक्ष्मी अति प्रसन्न होती हैं। वह भक्त की सभी मनोकामनाओं को अति शीघ्र पूर्ण करती हैं।

व्रतकथा प्रारंभ करने से पूर्व प्रसाद के रूप में कोई भी मीठी वस्तु खीर, गुड़-शक्कर आदि या नैवेद्य बनाकर रख लेना चाहिए। पूजा-अर्चना करने से पूर्व मां वैभवलक्ष्मी का स्तवन व स्तुति करनी चाहिए।

❑❑

पूजन सामग्री

रोली, मौली, धूप, अगरबत्ती, ऋतुफल, पान, पुष्प, पुष्पमाला, दूब, दही, शहद, घी, मेहंदी, सिंदूर, गुड़, बताशे, श्वेत वस्त्र, रक्त वस्त्र (लाल कपड़ा), हल्दी, चावल, पंचमेवा, लौंग, इलायची, श्रीफल, दीपक, रूई, माचिस, पंचपल्लव, सुपारी, समिधा (हवन हेतु लकड़ियां), हवन सामग्री, लोटा (पानी का बरतन), कटोरी, चम्मच।

वैभव लक्ष्मी पूजन मंत्र

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शंखचक्र गदाहस्ते महालक्ष्मी नमोऽस्तुते॥
पद्मासन स्थिते देवि वैभवलक्ष्मि स्वरूपिणि।
सर्वपाप हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते॥
श्वेतांबर धरे देवि नाना अलंकार भूषिते।
जगत् स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते॥

वैभव लक्ष्मी का ध्यान मंत्र

आसीना सरसीरुहे स्मितमुखी हस्ताम्बुजौर्विभृती,
दानं पद्म युगाभये च वपुषा सौदामिनी सन्निभा॥
मुक्ताहार विराजमान पृथुलोत्तुंगस्यनोद्भासिनी।
वायाद्धः कमल कटाक्ष विभवैरानंदयंती हरिम्॥

अथ श्री वैभवलक्ष्मी व्रतकथा

लाखों की जनसंख्या को अपने में समेटे कुशीनगर एक महानगर था। जैसी कि अन्य महानगरों की जीवनचर्या होती है, वैसा ही कुछ यहां भी था। यानी बुराई अधिक अच्छाई कम...पाप अधिक पुण्य कम। इसी कुशीनगर में हरिवंश नामक एक सद्‌गृहस्थ अपनी पत्नी दामिनी के साथ सुखी-सम्पन्न जीवन गुजार रहा था। दोनों ही बड़े नेक और संतोषी स्वभाव के थे। धार्मिक कार्यों-अनुष्ठानों में उनकी अपार श्रद्धा थी। दुनियादारी से उनका कोई विशेष लेना-देना नहीं था। अपने में ही मगन गृहस्थी की गाड़ी खींचे चले जा रहे थे दोनों।

किसी ने ठीक ही कहा है–'संकट और अतिथि के आने के लिए कोई समय निर्धारित नहीं होता।' कुछ ऐसा ही हुआ दामिनी के साथ–जब उसका पति हरिवंश न जाने कैसे बुरे लोगों की संगत में फंस गया और घर-गृहस्थी से उसका मन उचट गया। देर रात शराब पीकर घर आना और गाली-गलौज तथा मारपीट करना उसका नित्य का नियम-सा बन गया था। जुए, सट्टे, रेस तथा वेश्यागमन जैसे बुरे कर्म भी कुसंगति की बदौलत उसके पल्ले पड़ गए। धन कमाने की तीव्र लालसा ने हरिवंश की बुद्धि हर ली और उसको अच्छे-बुरे का भी ज्ञान न रहा। घर में जो कुछ भी था, सब उसके दुर्व्यसनों की भेंट चढ़ गया। जो लोग पहले उसका सम्मान करते थे, अब उसे देखते ही रास्ता बदलने लगे। भुखमरी की हालत में भिखमंगों के समान उनकी स्थिति हो गई।

लेकिन दामिनी बेहद संयमी और आस्थावान तथा संस्कारी स्त्री थी। ईश्वर पर उसे अटल विश्वास था। वह जानती थी कि यह सब कर्मों का फल है। दुख के बाद सुख तो एक दिन आना ही है...इस आस्था को मन में लिए वह ईशभक्ति में लीन रहती और प्रार्थना करती कि उसके दुख शीघ्र दूर हो जाएं। समय का चक्र अपनी रफ्तार से चलता रहा।

श्री अधिलक्ष्मी

हे अधिलक्ष्मी मां! मैंने अपनी सामर्थ्यानुसार आपकी पूजा-अर्चना की है, आप मेरे परिवार पर आए कष्टों का निवारण करें।

अचानक एक दिन दोपहर के समय द्वार पर हुई दस्तक की आवाज सुनकर दामिनी की तंद्रा भंग हुई। अतिथि सत्कार के भयमात्र से उसकी अंतरात्मा कांप उठी क्योंकि घर में अन्न का एक दाना भी नहीं था, जो अतिथि की सेवा में अर्पित किया जा सकता। फिर भी संस्कारों की ऐसी प्रबलता थी कि उसका मन अतिथि सत्कार को उद्धत हो उठा। उसने उठकर द्वार खोला। देखा, सामने एक दिव्य-पुरुष खड़ा था। बड़े-बड़े घुंघराले श्वेत केश...चेहरे को ढंके हुए लहराती दाढ़ी...गैरुए वस्त्रों का आवरण पहने...उसके चेहरे से तेज टपका पड़ रहा था...आंखें मानो अमृत-वर्षा सी कर रही थीं। उस दिव्य-पुरुष को देखकर दामिनी को अपार शांति का अनुभव हुआ और वह उसे देखते ही समझ गई कि आगत वास्तव में कोई पहुंचा हुआ सिद्ध महात्मा है। उसके मन में अतिथि के प्रति गहन श्रद्धा के भाव उमड़ पड़े और वह उसें सम्मान सहित घर के भीतर ले गई। दामिनी ने जब उसे फटे हुए आसन पर बैठाया तो वह मारे लज्जा के जमीन में गड़-सी गई।

उधर वह संत पुरुष दामिनी की ओर एकटक निहारे जा रहा था। घर में जो कुछ भी बचा-खुचा था दामिनी ने अतिथि की सेवा में अर्पित कर दिया, पर उसने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह तो बस दामिनी को यूं निहारे जा रहा था, मानो उसे कुछ याद दिलाने की चेष्टा कर रहा हो। जब काफी देर तक दामिनी कुछ न बोली तो उसने कहा-'बेटी, मुझे पहचाना नहीं क्या?'

उसका यह प्रश्न सुनकर दामिनी जैसे सोते से जागी और अत्यंत सकुचाते हुए मृदुल स्वर में बोली-'महाराज, मेरी धृष्टता को क्षमा करें, जो आप जैसे दिव्य पुरुष को मैं पहचानकर भी नहीं पहचान पा रही हूं, पारिवारिक कष्टों ने तो जैसे मेरी सोचने-समझने की शक्ति ही छीन ली है। लेकिन यह निश्चित है कि संकट की इस घड़ी में मुझे आप जैसे साधु पुरुष का ही सहारा है...तभी जैसे

दामिनी को कुछ याद हो आया...वह उस साधु के चरणों में गिरकर बोल उठी–'अब मैं आपको पहचान गई हूं महाराज! स्नेहरूपी अमृत की वर्षा करने वाले अपने शुभचिंतक को कोई कैसे भूल सकता है भला!' वास्तव में वह साधु मंदिर की राह के मध्य में बनी अपनी कुटिया के बाहर वटवृक्ष के नीचे बैठ साधना किया करता था और मंदिर आने-जाने वाले सभी श्रद्धालु उसे प्रणाम करके स्वयं को कृतार्थ अनुभव करते थे। दामिनी भी उन्हीं में से एक थी। जब पिछले काफी दिनों से उसने उसे मंदिर की ओर आते-जाते नहीं देखा तो उसकी कुशलक्षेम जानने के लिए पूछताछ करते हुए उसके घर की ओर आ निकला था।

दामिनी अभी अपनी सोचों में ही डूबी हुई थी कि साधु महाराज ने मौन भंग किया–'क्या कारण है पुत्री! तू आजकल मंदिर आती-जाती दिखाई नहीं पड़ती? तुझे जो भी कष्ट है, मुझे बता, शायद मैं तेरी कुछ सहायता कर सकूं।'

व्यक्ति दुखों के बोझ तले दबा हो तो ऐसे में सहानुभूति के दो बोल ही काफी होते हैं। दामिनी भी खुद पर संयम नहीं रख पाई और बिलखकर रोने लगी। तभी वह साधु वात्सल्यपूर्ण स्वर में बोला–'मन छोटा करने से समस्या हल नहीं होगी...सुख-दुख तो एक गाड़ी के दो पहियों के समान हैं। इनका आना-जाना तो जिंदगीभर लगा ही रहता है। अपना दुख किसी को बता देने से मन हल्का हो जाता है।'

कुछ देर चुप रहने के बाद दामिनी ने बोलना शुरू किया–'महाराज! सर्वसुखों से भरपूर था मेरा घर...कण-कण में खुशियों का नृत्य होता था। पति भी नेक और ईमानदार थे...सादा जीवन उच्च विचार की आधारशिला पर टिकी थी हमारी गृहस्थी। रुपये-पैसे की भी कोई कमी नहीं थी। सुबह-शाम घर में ईश वंदना होती थी। लेकिन अचानक न जाने किसकी नजर लग गई–हमारा भाग्य हमसे

श्री विजय लक्ष्मी

हे मां विजयलक्ष्मी! मेरे परिवार पर जो भी दुख या कष्ट आ पड़े हैं, आप अपनी कृपा-दृष्टि से उनका निवारण करें।

रूठ गया...मेरे पति कुसंगति में फंसकर अपना सबकुछ गंवा बैठे। अब तो ऐसा लगता है जैसे साया भी साथ छोड़कर जाने को तैयार बैठा है। भिखारियों से भी बदतर स्थिति हो गई है हमारी...।'

दामिनी की करुण-व्यथा सुनकर साधु का हृदय हाहाकार कर उठा; वह द्रवित स्वर में बोल उठा–'बेटी! कर्म का लिखा तो भोगना ही पड़ता है–तुम्हारे कष्टों का भी कर्मों से नाता है। लेकिन तुम चिंता न करो...सबकुछ पहले जैसा हो जाएगा। दुख के बाद ही सुख आता है...दुख सहे बिना सुख की सच्ची अनुभूति हो ही नहीं सकती। तुम मां लक्ष्मी के प्रति श्रद्धा जारी रखो...सबका उद्धार करने वाली, प्रेम का छलकता सागर हैं मां लक्ष्मी। अपने भक्तों पर सदैव उनकी कृपादृष्टि रहती है। तुम संपूर्ण आस्था के साथ मां वैभवलक्ष्मी का व्रत करना शुरू करो...तुम्हारी साधना अवश्य रंग लाएगी।'

दामिनी एक संस्कारी स्त्री थी। धर्म-कर्म में उसकी अगाध आस्था थी। मां वैभवलक्ष्मी के व्रत की बात सुनकर उसका चेहरा दमक उठा, बोली– 'महाराज, यदि इस व्रत को करने से मेरे परिवार पर आई विपदा टल सकती है तो मैं इसे जरूर करूंगी। आप मुझे बताएं कि इस व्रत को कब और कैसे किया जाता है?'

साधु महाराज दामिनी की भक्ति-भावना देखकर प्रसन्न होकर बोले–'बेटी! सारे जगत का कल्याण करने वाली मां वैभवलक्ष्मी के व्रत की विधि मैं जनकल्याणार्थ तुम्हें बता रहा हूं–प्रत्येक शुक्रवार को यह व्रत किया जाता है। सर्वप्रथम, जितने शुक्रवार को यह व्रत करना हो, उसका संकल्प लेकर मां वैभवलक्ष्मी को मन-ही-मन प्रणाम करें। स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ धवल वस्त्र पहनकर पूरब दिशा की ओर मुंह करके आसन पर बैठें। सामने एक चौकी पर चावल की एक ढेरी लगाकर उस पर पानी से भरा कलश

स्थापित करें, जो तांबे का होना चाहिए। कलश को कटोरी से ढंक दें और उस कटोरी में कोई भी स्वर्णाभूषण रखें...सोना न हो तो चांदी का आभूषण रखें...वह भी पास न हो तो रुपये का सिक्का भी काम दे सकता है। शुद्ध घी का दीपक तथा अगरबत्ती जलाएं और मन-ही-मन पूर्ण श्रद्धा के साथ मां वैभवलक्ष्मी का जाप करते रहें। 'श्री यंत्र' मां लक्ष्मी का प्रिय यंत्र है, उसे शत-शत नमन करें। (श्रीयंत्र उपलब्ध न हो तो पुस्तक में दिए उसके स्वरूप से काम चल जाएगा।) साथ ही मां वैभवलक्ष्मी के सभी स्वरूपों को नमस्कार करें (इनकी सभी छवियां पुस्तक में दी गई हैं)। कटोरी में रखे गहने या रुपये पर हल्दी, कुंकुम तथा अक्षत अर्पित करें। कोई भी मिष्ठान्न प्रसाद रूप में रखें। संभव न हो पाए तो गुड़ या शक्कर से भी काम चल सकता है। फिर श्रद्धापूर्वक मां की आरती करके 14 बार प्रेम सहित बोलें–'जय मां वैभवलक्ष्मी।'

'मां वैभवलक्ष्मी मेरी मनोकामना पूरी करें' ऐसा संकल्प लेकर सच्चे मन से मां से विनती करें। प्रसाद बांटें और स्वयं भी ग्रहण करें। दिन में एक बार सात्विक भोजन करें, यदि संभव हो तो उपवास रखें। पूजा में रखा गहना या रुपया लाल कपड़े में लपेटकर सुरक्षित रख लें। यह आगे आने वाले शुक्रवारों को पूजा में काम आएगा। कलश में भरा जल तुलसी के पौधे को समर्पित कर दें तथा अक्षत पक्षियों को आहारस्वरूप डालें। ऐसी शास्त्रोक्त विधि से व्रत करने वालों को शीघ्र फल मिलता है।'

साधु महाराज के मुखारविंद से यह वृत्तांत सुनकर दामिनी पुलकित हो उठी। उनके चरण स्पर्श कर उत्साहित स्वर में बोली–'अब लगे हाथ उद्यापन की विधि भी बता दें महाराज! इसके बिना तो व्रत अधूरा ही रह जाएगा?'

'अवश्य बेटी!' कहकर साधु महाराज उद्यापन की विधि बताने लगे–'चाहे जितने भी शुक्रवार (प्राय: 11 या 21) व्रत करने

श्री ऐश्वर्यलक्ष्मी

हे मां ऐश्वर्यलक्ष्मी! पूजा-अर्चना से प्रसन्न होकर जैसे अपने अन्य भक्तों को ऐश्वर्य प्रदान किया, वैसा ही मुझे भी प्रदान करें।

का संकल्प लिया हो, लेकिन मन में मां वैभवलक्ष्मी के प्रति श्रद्धा तथा आस्था बराबर बनी रहनी चाहिए। जिस दिन अंतिम शुक्रवार का व्रत हो, उस दिन शास्त्रोक्त विधि से उद्यापन किया जाता है। अन्य शुक्रवारों की भांति ही इस दिन भी पूजन करें। हां, प्रसाद के रूप में खीर अवश्य रखें। पूजा के बाद नारियल फोड़कर सात कुंआरी कन्याओं के चरण धोकर, कुंकुम का तिलक लगाकर पूजन करें, उन्हें सामर्थ्यानुसार दक्षिणा दें और मां वैभवलक्ष्मी व्रत की पुस्तकें उपहारस्वरूप भेंट में दें। फिर प्रसाद के रूप में खीर वितरित करें। अब मां वैभवलक्ष्मी के सभी स्वरूपों को मन-ही-मन नमन करते हुए कहें-'हे मां! यदि मैंने शुद्ध तथा निर्मल हृदय से आपकी स्तुति करते हुए वैभवलक्ष्मी व्रत विधि- विधानानुसार पूर्ण किए हों तो मेरी मनोकामना (यहां पर अपनी मनोकामना का स्मरण करें) अवश्य पूरी करना। संतानहीनों को संतान देने वाली, दुखियों का दुख हरने वाली, अखंड सौभाग्य का वरदान देने वाली, कुंआरी कन्याओं को मनचाहा वर दिलाने वाली मां वैभवलक्ष्मी आपकी महिमा अपरम्पार है। अपने हर भक्त की विपत्तियां हरकर उन्हें सुख-समृद्धि प्रदान करना।'

साधु महाराज से वैभवलक्ष्मी व्रत का शास्त्रोक्त ज्ञान प्राप्त करके दामिनी भावविभोर हो उठी। उसे अपने भीतर एक अनोखे तथा असीमित आत्मबल का संचार होता महसूस हुआ। उसने भी मां वैभवलक्ष्मी के 21 व्रत आते शुक्रवार से शुरू करने का संकल्प लेकर साधु महाराज को आदर सहित विदा किया और मन-ही-मन मां वैभवलक्ष्मी का स्तुतिगान करने लगी।

दो दिन बाद ही शुक्रवार आ गया। उससे पहली रात दुखों की मारी दामिनी ठीक से सो भी न सकी। मां वैभवलक्ष्मी के व्रत करने से उसकी समस्याओं का अंत हो जाएगा, यह सोचकर वह मुंह अंधेरे ही उठ बैठी और स्नानादि कर स्वच्छ वस्त्र धारण किए।

आसन पर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके दामिनी ने अपने सम्मुख रखी चौकी पर चावल की छोटी-सी ढेरी बनाकर उस पर तांबे का कलश रखा। लेकिन जब स्वर्णाभूषण रखने की बात आई तो धर्मसंकट में पड़ गई। सारे गहने पति के दुर्व्यसनों की भेंट चढ़ चुके थे...विवाहिता स्त्री थी, सो मंगलसूत्र भी उतारकर नहीं रख सकती थी, और कोई गहना था नहीं। तभी उसे उन नन्ही पायलों का स्मरण हो आया, जो उसने अपनी आने वाली संतान के लिए बनवाकर रख छोड़ी थीं और पति की निगाहों से उन्हें बचा रखा था। उसने झटपट वह पायलें निकालीं और गंगाजल से धोकर उन्हें शुद्ध करके कलश पर रखी कटोरी में डाल दिया। डिब्बे की तली में से बची-खुची शक्कर निकालकर उसे प्रसाद के रूप में रखा और विधि अनुसार व्रत किया। सर्वप्रथम उसने अपने पति को प्रसाद दिया।

आने वाला पूरा सप्ताह बड़ी ही हंसी-खुशी से बीता। बात-बात पर झल्ला उठने वाला उसका पति अपेक्षाकृत शांत तथा संयत रहा—कोई मारपीट तथा क्लेश घर में नहीं हुआ। इसे दामिनी ने मां वैभवलक्ष्मी का चमत्कार समझा और मन-ही-मन उन्हें प्रणाम किया। मां वैभवलक्ष्मी के प्रति उसकी आस्था और भी बलवती हो गई। इसी प्रकार शास्त्रोक्त विधि से दामिनी ने बीस शुक्रवार के व्रत पूरे कर लिए। इस बीच कई परिवर्तन हुए थे... उसका पति कुसंगति छोड़कर सीधी राह पर आ गया था और उसका कामकाज भी जमने लगा था। घर में यदि किसी चीज की बहुतायत नहीं थी तो कमी भी नहीं रह गई थी। यह सब मां वैभवलक्ष्मी के चमत्कार और दामिनी की आस्था तथा विश्वास का परिणाम था।

इक्कीसवें शुक्रवार को व्रत का उद्यापन करना था। साधु महाराज के वचन अब भी मानो दामिनी के कानों में गूंज रहे थे। उनकी बताई विधि के अनुसार ही दामिनी ने शास्त्रोक्त विधि से

श्री वीरलक्ष्मी

हे वीरलक्ष्मी मां! मुझ पर आपकी दयादृष्टि बनी रहे। आपकी कृपा बनी रही तो सभी सुख-वैभव मुझे प्राप्त हो जाएंगे।

उद्यापन किया। सात कुंआरी कन्याओं को भोजन कराकर दक्षिणा दी। आसपास की सौभाग्यवती स्त्रियों में प्रसाद तथा मां वैभवलक्ष्मी व्रतकथा की पुस्तकें वितरित कीं। मां वैभवलक्ष्मी के हर स्वरूप (पुस्तक में दी गई छवियां) को प्रणाम किया और कहा–'आपकी महिमा निराली है मां! आपने मेरे सारे दुख हर लिए...मेरी सभी मनोकामनाएं पूर्ण कर दीं...मेरा उजड़ा घर फिर से बस गया। मेरा यह नया जीवन आप ही की देन है मां...मैं आजीवन आपकी पूजा-अर्चना करूंगी और दूसरों को भी आपकी महिमा से अवगत कराकर वैभवलक्ष्मी के व्रत रखने के लिए प्रेरित करूंगी।

बोलो जय मां वैभवलक्ष्मी! आपकी सदा ही जय हो!

मां वैभवलक्ष्मी व्रत के चमत्कार

मां ने जीने की राह दिखाई

रजनी की शादी हुए अभी पांच-छह वर्ष ही बीते थे। उसकी गृहस्थी सुचारु रूप से चल रही थी। उसका एक पुत्र भी था। दुर्भाग्य से उसके पति का एक सड़क दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया।

उसके सामने पहाड़-सा जीवन था। रिश्ते-नाते वालों ने दूसरी शादी करने के लिए उस पर काफी दबाव डाला लेकिन वह नहीं मानी और अपने ही पैरों पर खड़े होने का साहसिक निर्णय कर लिया।

जैसे-तैसे समय गुजरता गया। अब उसके सामने समस्या यह थी कि वह क्या करे? उसकी एक सहेली राधा ने उसे धैर्य बंधाते हुए कहा, 'तू हिम्मत रख, मां ने चाहा तो सब ठीक हो जाएगा।' फिर उसने रजनी को सलाह दी कि वह मां वैभवलक्ष्मी के व्रत रख ले। शायद मां ही कोई रास्ता दिखा दे।'

रजनी ने राधा की बात मान ली और 21 शुक्रवार के व्रत करने

श्री मां वैभव लक्ष्मी

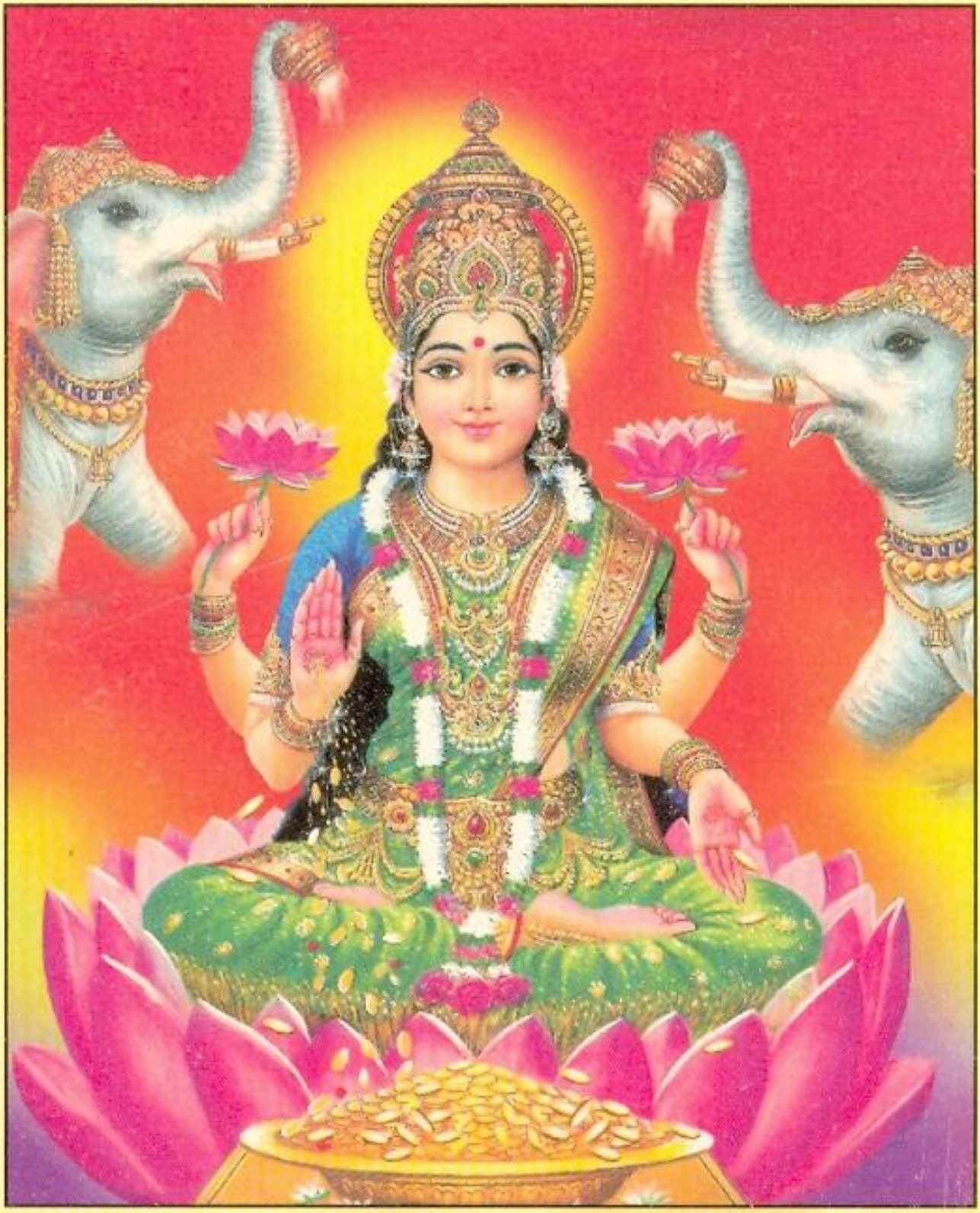

हे मां वैभव लक्ष्मी! सभी की मनोकामनाएं शीघ्र पूर्ण कर
जगत का कल्याण करें-यही हमारी प्रार्थना है।

मां वैभव लक्ष्मी को प्रसन्न करने तथा धन-धान्य, सुख-सम्पत्ति, ऐश्वर्य-वैभव को बढ़ाने और समृद्धि प्रदान करने वाला अद्‌भुत चमत्कारी असली

श्रीयंत्र

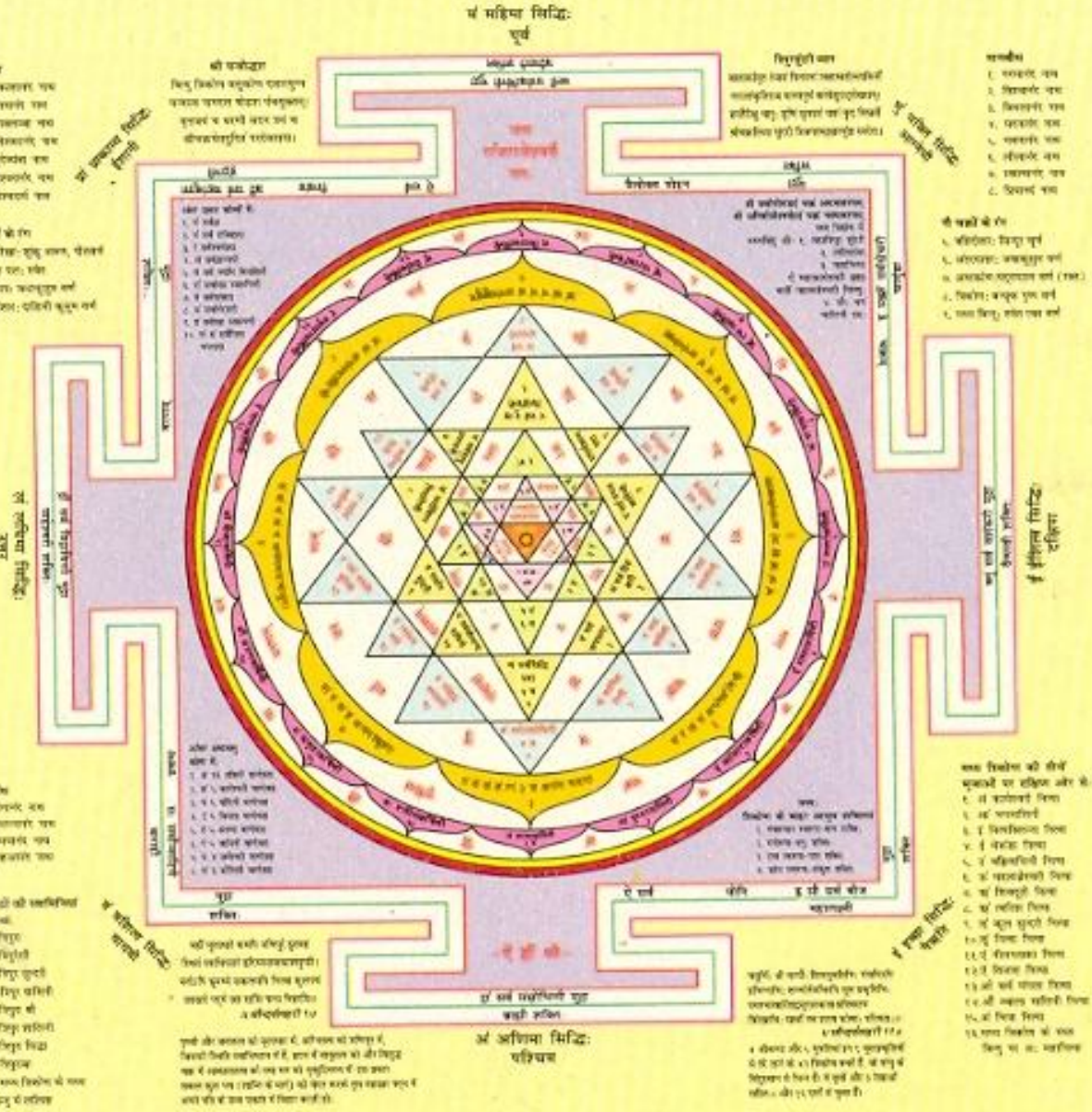

सर्वसिद्धिकारी मां वैभव लक्ष्मी की इस व्रतकथा को आरंभ करने से पहले इस श्रीयंत्र को पूर्ण श्रद्धा सहित नमन करें।

का संकल्प ले लिया। अभी उसने चार शुक्रवार ही व्रत रखे थे कि उसके मन में विचार आया कि सिलाई का डिप्लोमा तो उसने कर ही रखा है। क्यों न सिलाई सेंटर ही खोल लिया जाए, मकान तो अपना है ही।

रजनी ने सही समय पर घर के एक हिस्से में सिलाई सेंटर खोल लिया और लड़कियों व महिलाओं को सिलाई की ट्रेनिंग देने लगी। जब मां की कृपा होती है तो रास्ते अपने आप ही निकल आते हैं। प्रारंभ में तो उसे काफी मेहनत करनी पड़ी लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया उसका सिलाई सेंटर दिन-दुगनी, रात चौगुनी उन्नति करता गया।

व्रत समाप्ति के दिन उसने मां वैभवलक्ष्मी की विधि-विधान से पूजा की। फिर हवन करके 21 कन्याओं को भोजन कराया। मां के भक्तों को उसने मां वैभवलक्ष्मी व्रतकथा की 21 पुस्तकें भी भेंट कीं।

इस प्रकार मां की असीम कृपा से उसे जीने की नई राह मिली। आज उसके सिलाई सेंटर में सिलाई की कई मशीनें हैं, साथ ही अन्य शिक्षिकाएं भी उसके यहां काम करती हैं। यह मां वैभवलक्ष्मी का ही कृपा प्रसाद है कि आज उसके घर में सब तरह का सुख वैभव है।

खोया हुआ भतीजा मिला

नवरात्र के दिनों में मैं, मेरे भइया, भाभी व दोनों भतीजे वैष्णव देवी गए। इन दिनों वहां काफी भीड़ रहती है। जब हम दर्शन करके लौट रहे थे तो कटरा में मेरा छोटा भतीजा आशुतोष भीड़ में कहीं गुम हो गया। हमने काफी ढूंढ़ा लेकिन वह नहीं मिला। हमने दूरदर्शन, अखबारों, आकाशवाणी के द्वारा विज्ञापित भी करवा दिया और एक दिन वहां रुके भी, पर वह नहीं मिला। हम सभी का

रो-रोकर बुरा हाल था। आखिर दिल पर पत्थर रखकर हम वापस घर लौट आए।

कुछ दिन बीते होंगे कि हमारे पड़ोस में रहने वाली श्रीमती मालती खोज-खबर लेने आईं। उन्होंने सहानुभूति जताते हुए एक उपाय बताया। उन्होंने भाभी से कहा, 'सुषमा! तुम मां वैभवलक्ष्मी के निमित्त श्रद्धानुसार 11 या 21 व्रत रखो। मां की कृपा से आशुतोष का कहीं-न-कहीं सुराग अवश्य लग जाएगा।' उन्होंने व्रत की विधि भी भाभी को बतला दी।

भाभी ने 11 शुक्रवार का संकल्प करके अगले ही शुक्रवार से व्रत रखने शुरू कर दिए। तीसरे शुक्रवार को जब भाभी ने मां वैभवलक्ष्मी की पूजा की तो उसी रात उन्हें स्वप्न आया कि आशुतोष किसी महिला के साथ एक मंदिर में खड़ा था। उन्होंने भइया को जब यह बताया तो वह बोले कि सुषमा जो मंदिर तुम बता रही हो वह तो जयपुर में है।

बड़े भतीजे को मेरे पास छोड़कर भइया-भाभी दूसरे दिन ही जयपुर रवाना हो गए। सड़क से ही शिला देवी का वह मंदिर साफ दिखाई पड़ता था। भइया ने भाभी से कहा, 'आज हम किसी होटल में रुककर कल इस मंदिर में जाएंगे।'

अगले दिन जब भइया-भाभी उस मंदिर में पहुंचे तो आशुतोष उसी महिला के साथ मंदिर में आया, जो भाभी को स्वप्न में दिखाई दी थी। बातचीत करने पर उस महिला ने बताया, 'यह बच्चा हमें कटरा में एक धर्मशाला के बाहर रोता हुआ मिला था। हमारे कोई संतान नहीं थी इसलिए हम इसे अपने साथ ले गए।'

भइया-भाभी ने आशुतोष को सीने से चिपटा लिया और उस महिला का धन्यवाद ज्ञापित कर वहां से उसी दिन दिल्ली के लिए रवाना हो गए। कुछ समय उस महिला के घर भी भइया-भाभी ने व्यतीत किया और महिला के पति से भी भेंट की।

श्री धान्यलक्ष्मी

हे मां धान्यलक्ष्मी! आपकी वंदना कर मैं आपसे सुख - शांति और समस्त ऐश्वर्यों की प्राप्ति का वरदान मांगता हूं।

इस तरह मां वैभवलक्ष्मी की कृपा से मेरा खोया हुआ भतीजा वापस मिल गया। फिर भाभी ने अपना संकल्प पूरा किया। अंतिम व्रत के दिन विधि- विधान से मां वैभवलक्ष्मी की पूजा की तथा 11 कन्याओं को भोजन कराया। भइया-भाभी ने मां के भक्तों को वैभवलक्ष्मी व्रतकथा की 11 पुस्तकें भी भेंट स्वरूप दीं। आज मेरा भतीजा 13 साल का है। मां की कृपा से सब ठीक हो गया।

ब्रीफकेस वापस मिला

राकेश का हीरे-जवाहरात का कारोबार था। एक बार वह ट्रेन द्वारा अहमदाबाद से दिल्ली आ रहे थे कि एक स्टेशन पर उनका ब्रीफकेस बदल गया। उनके साथ यात्रा कर रहे यात्री का ब्रीफकेस भी लगभग उनके जैसा ही था। यह रहस्य तब खुला जब राकेश ने घर पहुंचकर ब्रीफकेस खोलकर देखा। बदला हुआ ब्रीफकेस देखकर उनका चेहरा पीला पड़ गया। क्योंकि उनके ब्रीफकेस में बिजनेस संबंधी जरूरी कागजातों के अलावा दो अलग-अलग पुड़ियाओं में हीरे-जवाहरात भी थे, जो वह अहमदाबाद से खरीदकर लाए थे।

उनकी पत्नी रेखा ने धैर्य बंधाते हुए कहा, 'जो होना था, सो हो गया। अब तो मां वैभवलक्ष्मी की कृपा हो जाए तो संभव है कि ब्रीफकेस वापस मिल जाए।'

फिर उन दोनों ने मां वैभवलक्ष्मी के निमित्त 21 शुक्रवार का व्रत रखने का संकल्प किया। अभी पांचवां शुक्रवार ही बीता था कि एक व्यक्ति का पत्र मिला जिसमें राकेश को संबोधित करते हुए लिखा था कि गलती से उनका ब्रीफकेस उसके पास पहुंच गया है, कृपया आकर ले जाएं।' पत्र में उस जगह का पता भी लिखा था, जहां का वह व्यक्ति रहने वाला था यानी अहमदाबाद का।

राकेश दूसरे दिन ही अहमदाबाद रवाना हो गए और दो दिन बाद

अपना ब्रीफकेस सुरक्षित लेकर लौट आए। उस व्यक्ति ने राकेश की काफी आवभगत भी की थी।

ब्रीफकेस मिल जाने पर उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। लेकिन वे दोनों 21 शुक्रवार तक व्रत करने का अपना संकल्प भूले नहीं। यही नहीं, व्रत के अंतिम दिन 21 कन्याओं को भोजन कराकर हवन भी किया। उन्होंने मां वैभवलक्ष्मी व्रतकथा की 21 प्रतियां भी भक्तजनों में बांटीं।

इस तरह मां की कृपा से उनका लाखों का नुकसान होते-होते बच गया।

मां की कृपा से पुत्र प्राप्ति

सेठ अमृतलाल के पास अपार संपत्ति थी। फिर भी वह दिन-रात पैसा कमाने की ही सोचा करते थे। यह भाग्य की विडम्बना थी कि शादी के 15 वर्ष बाद भी उनके कोई संतान नहीं थी। यही कारण था कि खुशियां उनको काटने को दौड़ती थीं।

एक दिन जब सेठ अमृतलाल सायंकाल घर लौटे तो अपनी पत्नी को गहन चिंता में बिस्तर पर लेटे पाया। उन्होंने पास जाकर पूछा, 'प्रिये! तुम्हारी यह उदासी किस कारण है? तुम्हारा सारा शरीर सोने से लदा है, कोठी, नौकर-चाकर, धन-दौलत सभी कुछ तो है। फिर तुम्हारी उदासी का कारण समझ में नहीं आ रहा?'

उनकी पत्नी लाजवंती ने कहा, 'हे स्वामी! यह सही है कि हमारे पास अतुल संपत्ति है। लेकिन यह है किसके लिए?'

अमृतलाल ने पूछा, 'तुम कहना क्या चाहती हो?'

लाजवंती ने कहा, 'जब हमारे संतान ही नहीं है तो यह धन-दौलत बेकार ही तो है।'

अमृतलाल ने लाजवंती को दिलासा देते हुए कहा, 'तुम तो अच्छी तरह जानती ही हो कि संतान प्राप्ति के लिए हमने क्या-कुछ

नहीं किया। हालांकि हम दोनों की डॉक्टरी जांच में कोई दोष भी नहीं पाया गया। लगता है, हमारे भाग्य में संतान सुख लिखा ही नहीं है।'

इस तरह दोनों पति-पत्नी एक-दूसरे के दुख को समझकर उदास हो गए।

तभी एक नौकरानी दौड़ती हुई उनके पास आई और बोली, 'मालकिन एक बहुत ही पहुंचे हुए महात्मा द्वार पर आए हैं।'

दोनों ने सोचा शायद संतों की कृपा से ही कोई उपाय हाथ लग जाए और वे दोनों द्वार पर आ गए।

महात्मा के चरण स्पर्श कर उन्हें विशेष कक्ष में लाकर उच्च आसन पर विराजमान किया और स्वयं धरती पर बैठ गए। दोनों ने उनकी बहुत सेवा की।

सेवा से प्रसन्न होकर महात्मा ने कहा, 'मैं तुम लोगों की सेवा से बहुत प्रसन्न हुआ हूं, जो चाहो वर मांग लो।'

वे दोनों हाथ जोड़कर विनीत भाव से बोले, 'महात्मन्! वैसे तो हम सब तरह से सुखी हैं लेकिन संतान सुख का अभाव हमें शूल समान चुभता है। यदि आप कोई उपाय बता सकें तो...।'

महात्मा ने फिर मां वैभवलक्ष्मी के व्रत का महत्त्व बताते हुए कहा, 'यदि तुम लोग 21 शुक्रवार तक मां के निमित्त व्रत रखो तो तुम्हारी मनोकामना निश्चित रूप से पूरी होगी।'

दोनों पति-पत्नी ने उस व्रत की विधि जाननी चाही। तब महात्मा ने बताया कि व्रत समाप्ति के दिन हवन करके 21 कन्याओं को भोजन कराकर मां के भक्तों को श्री मां वैभवलक्ष्मी व्रतकथा की पुस्तकें भेंट स्वरूप दें।

सेठ अमृतलाल व उनकी पत्नी लाजवंती ने महात्मा द्वारा बताए उपाय को विधिवत अपनाया। व्रत के अंतिम दिन से नौ दिन बाद

श्री संतानलक्ष्मी

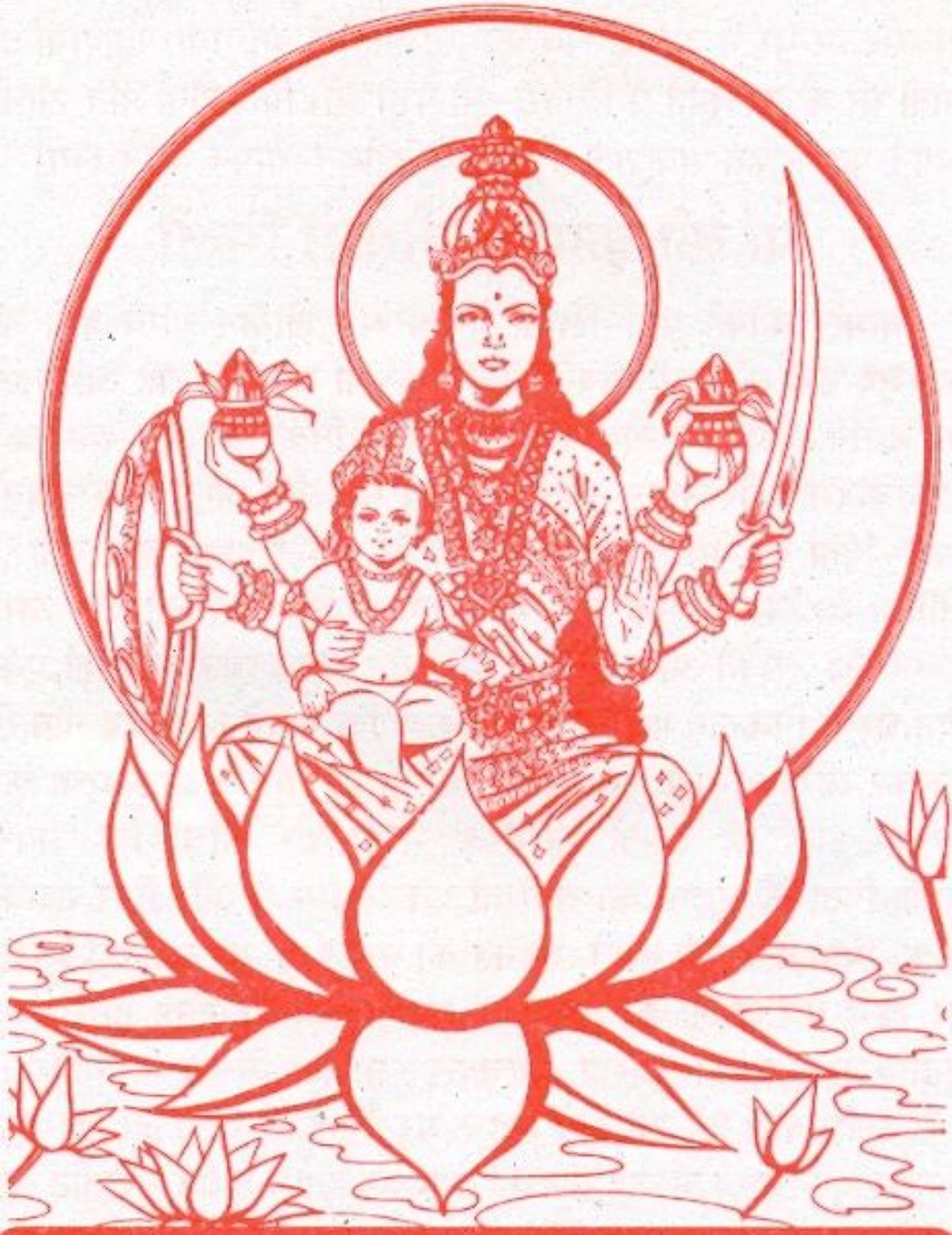

हे मां संतानलक्ष्मी! जैसे अन्य भक्तों को आपने धन-संपदा और योग्य संतान प्रदान की है, ऐसी ही अनुकंपा मुझ पर भी करें।

लाजवंती गर्भवती हुई और नौ माह बाद सुंदर व गुणवान पुत्र को जन्म दिया। यह सब मां की कृपा के कारण ही हुआ। पुत्र जन्म के अवसर पर घर में आनंदोत्सव का-सा माहौल बन गया। खुशियां तो मानो घर के हर कोने में बिखरी-सी पड़ी थीं। फिर दोनों पति-पत्नी अपने पुत्र सहित सकुशल सुखपूर्वक जीवन-यापन करने लगे।

मां की कृपा से नौकरी मिली

कमल काफी पढ़ा-लिखा युवक था। लेकिन योग्य होने के बावजूद उसे कहीं भी नौकरी नहीं मिल पा रही थी। वह आशाओं का दामन थामे रोज नौकरी की खोज में निकलता और शाम को थके कदमों और उदास चेहरे के साथ घर लौट आता। तब उसके माता-पिता का एक ही सवाल होता था, 'बेटा, कहीं बात बनी?' लेकिन वह नकारात्मक मुद्रा में केवल गरदन भर हिला देता था।

जब उसकी आशाओं ने उम्मीद का दामन छोड़ दिया तो एक दिन घर से निकलने पर उसने प्रण किया कि या तो आज वह नौकरी ढूंढ़कर रहेगा अन्यथा आत्महत्या कर लेगा। लेकिन आत्महत्या का विचार आते ही उसके मस्तिष्क में विचार कौंधा कि अपने माता-पिता के बुढ़ापे का वही तो एक सहारा है और फिर उसके माता-पिता ने अपनी कड़ी मेहनत की कमाई भी तो उसी की शिक्षा पर खर्च कर डाली है। यदि वह आत्महत्या कर लेगा तो उनका बुढ़ापा नरक समान गुजरेगा...सोचकर उसने यह विचार त्याग दिया।

वह नौकरी की खोज में सड़क पर पैदल ही चला जा रहा था। दिनभर जूते घिसने के बाद रोज की तरह वह हताश होकर घर लौट रहा था कि उसकी नजर एक मंदिर पर पड़ी। यह सही है कि जब मनुष्य अत्यधिक दुखी होता है तब वह भगवान की ही शरण लेता है। वह भी मंदिर में गया, जहां उसकी भेंट मंदिर के पुजारी से हो गई।

पुजारी ने उसका लटका हुआ मुंह देखकर कारण पूछा तो उसने

बताया, 'वह रोजगार के अभाव में बहुत दुखी है। कोई उपाय हो तो बताएं?'

तब पुजारी ने मां वैभवलक्ष्मी के व्रत का महत्त्व बताते हुए कहा कि 11 शुक्रवार तक यदि वह मां वैभवलक्ष्मी का व्रत करे तो उसकी मनोकामना अवश्य पूरी होगी।

कमल के पूछने पर पुजारी ने व्रत विधि बताते हुए कहा कि व्रत के अंतिम शुक्रवार वाले दिन 11 कन्याओं को भोजन कराए तथा श्रद्धालु भक्तों को मां वैभवलक्ष्मी व्रतकथा की 11 पुस्तकें भेंट करे।

कमल प्रसन्न होकर घर पहुंचा। उसने अपने माता-पिता को मां वैभवलक्ष्मी के व्रत के बारे में बताया। फिर उसने 11 शुक्रवार तक व्रत किया। व्रत के अंतिम दिन वही सब किया जो पुजारी ने बताया।

मां वैभवलक्ष्मी की कृपा से व्रत के अंतिम दिन से ठीक एक सप्ताह बाद कमल को सरकारी विभाग में उच्च पद पर नौकरी मिल गई। इस तरह कमल अपने माता-पिता के साथ सुखपूर्वक जीवन बिताने लगा।

मां वैभवलक्ष्मी ने दिया वैभव

नरेश और महेश दोनों अच्छे मित्र थे। उन्होंने साझेदारी में कपड़े का व्यवसाय किया। कारोबार अच्छा-खासा चल रहा था। दोनों मित्र अपने परिवार सहित सुख के दिन व्यतीत कर रहे थे।

कहा जाता है कि व्यक्ति अपने दुख से दुखी नहीं होता बल्कि दूसरे के सुख से दुखी होता है। दोनों की गहन मित्रता और खुशहाली दिनेश को खलने लगी। उसने ऐसा चक्रव्यूह रचा कि नरेश और महेश में कुछ ही दिनों में फूट पड़ गई। फलस्वरूप महेश ने व्यापार में से न केवल अपना हिस्सा अलग कर लिया बल्कि नरेश का हिस्सा भी हड़प लिया और उसे दर-दर का भिखारी बना दिया।

अब नरेश दिन-रात चिंता में घुलकर अस्वस्थ हो गया। लेकिन उसकी पत्नी सुनीता ने हिम्मत नहीं हारी और अपने पति का हौसला बढ़ाती रही। उसने घर-खर्च भी अपने गहने आदि बेचकर इस ढंग से चलाया कि नरेश को कुछ महसूस ही नहीं हुआ। साथ ही उसका इलाज भी करवाया।

उसके पड़ोस में रहने वाली एक वृद्धा से उसकी यह स्थिति देखी नहीं गई। एक दिन वह उसके पास आई और कहने लगी, 'बेटी! भाग्य में जो लिखा है उसे भला कौन टाल सका है। फिर भी मनुष्य को धर्म-कर्म अवश्य करते रहना चाहिए। यदि तुम्हारी धर्म में आस्था है तो एक उपाय बताऊं।'

सुनीता बोली, 'मांजी! जब व्यक्ति पर दुख पड़ता है तो नास्तिक भी आस्तिक हो जाता है। मेरी तो वैसे भी धर्म में काफी आस्था है। आप कुछ उपाय जानती हैं तो अवश्य बताएं।'

वृद्धा बोली, 'बेटी! भगवान विष्णु के आशीर्वाद से तुम मां वैभवलक्ष्मी की कृपा प्राप्त करो। मां तुम्हारी हर विपदा दूर करेंगी।'

सुनीता ने पूछा, 'कैसे मांजी?'

वृद्धा ने बताया, 'मां वैभवलक्ष्मी के प्रति श्रद्धा-भक्ति से कम-से-कम 21 शुक्रवार तक व्रत रखने का तुम संकल्प करो। मेरा अटूट विश्वास है कि कुछ ही समय में तुम्हें उसका फल अवश्य मिलेगा।'

सुनीता ने 21 शुक्रवार तक मां वैभवलक्ष्मी के व्रत करने का संकल्प लिया। उसने अभी चार शुक्रवार के ही व्रत किए थे कि उसके पति का स्वास्थ्य सुधरने लगा। जब छठे शुक्रवार का व्रत किया तो उसके पति के पास उसका एक जानकार वृद्ध व्यापारी आया और उसका सहयोग मांगा।

वृद्ध व्यापारी ने नरेश से कहा, 'बेटा! अब मैं वृद्ध हो चला हूं।

तुम्हें तो पता ही है कि मेरे कोई पुत्र भी नहीं है जो मेरे कारोबार को संभाल सके। इसलिए पूरी तरह स्वस्थ होकर तुम मेरा कारोबार पुत्रवत संभाल लो। क्योंकि तुम इस कार्य के अनुभवी हो और मेरे विश्वासपात्र भी।'

नरेश की आंखों में खुशी के आंसू छलक पड़े। उसनें वृद्ध की बात मानकर अगले दिन से ही उसका कारोबार संभाल लिया।

जब वह पहले दिन दुकान पर गया तो मां वैभवलक्ष्मी की कृपा से उसे अच्छा लाभ हुआ। अब तो मां वैभवलक्ष्मी पर उसकी आस्था और भी बलवती हो गई। फिर दोनों पति-पत्नी ने विधि- विधान से मां के निमित्त 21 शुक्रवारों का व्रत किया।

व्रत के अंतिम दिन दोनों ने घर में ही मां की पूजा कर हवन किया तथा 21 कन्याओं को भोजन कराया। मां वैभवलक्ष्मी व्रतकथा की 21 पुस्तकें भी उन्होंने मां के भक्तों को भेंटस्वरूप दीं।

मां की कृपा से अब नरेश की खुशियां लौट आईं। वह मां वैभवलक्ष्मी की भक्ति कर सुख से रहने लगा। फिर उसे कभी कोई कष्ट नहीं हुआ।

गड़ा हुआ स्वर्ण कलश मिला

गांव मनोहरपुर में मां वैभवलक्ष्मी के चमत्कारों की चारों तरफ गूंज थी। हर किसी की जुबान पर 'जय मां वैभवलक्ष्मी'...'जय मां वैभवलक्ष्मी' का जयघोष था।

उसी गांव के रामू को जब भनक पड़ी तो वह भी चमत्कारों की टोह लेने पहुंचा। तरह-तरह के चमत्कारों को सुनकर उसके भी मन में आया कि उसे भी कम-से-कम 11 शुक्रवार के व्रत कर ही लेने चाहिए। फिर देखा जाएगा कि मां क्या चमत्कार करती हैं।

वह वापस घर लौटा और घर वालों को मां के चमत्कारों के

बारे में बताया तो सभी लोगों ने मां में आस्था व्यक्त करते हुए 11 शुक्रवार के व्रत करने का संकल्प ले लिया।

तीन शुक्रवार के व्रत करने पर रामू को मां के चमत्कार स्वरूप एक स्वप्न दिखाई दिया। स्वप्न में उसने देखा कि उसके खेत में एक पेड़ के नीचे सोने का कलश दबा है जिसमें रत्न व स्वर्ण मुद्राएं भरी हैं।

सुबह जागने पर उसने स्वप्न के बारे में घर के लोगों को बताया। सभी ने आश्चर्य व्यक्त किया और कहा शायद मां के चमत्कार के कारण ही ऐसा स्वप्न आया हो। चलकर देखते हैं। फिर सभी लोग खेत में गए।

रामू ने जैसा पेड़ स्वप्न में देखा था वैसा ही पेड़ खेत में मौजूद था। सबने मिलकर पेड़ के नीचे खोदना शुरू किया। करीब पांच हाथ गहरा खोदने पर उन्हें स्वर्ण कलश मिल गया। सब इसे मां का प्रसाद मानकर वह कलश बाहर निकालकर घर ले गए।

मां के चमत्कार स्वरूप वह परिवार गांव का प्रतिष्ठित परिवार बन गया। अब रामू के पास कई मकान और खेत हो गए थे। उसने गांव में भगवान विष्णु और मां वैभवलक्ष्मी का मंदिर भी बनवाया। इस तरह रामू का परिवार मां की कृपा से फलने-फूलने लगा।

रामू ने परिवार सहित 11 शुक्रवार के व्रत का संकल्प पूरा किया। 11वें शुक्रवार को उसने मां का विधिवत पूजन हवन कर 11 कन्याओं को भोजन कराया। इसके अलावा गांव भर में मां वैभवलक्ष्मी व्रत कथा की पुस्तकें भी वितरित कीं।

बिना दहेज की शादी

मनोहर एक प्राइवेट फर्म में साधारण पद पर कार्य करता था। जितना वेतन मिलता था, उसमें घर खर्च मुश्किल से ही पूरा हो पाता था। यही कारण था कि वह धन का यथोचित संग्रह नहीं कर पाया

था। उसने इतना अवश्य किया था कि अपनी लड़की रंजना को अच्छी शिक्षा दिलाने में लापरवाही नहीं बरती थी। रंजना जितनी खूबसूरत थी, उतनी ही गुणवान व बुद्धिमान भी थी। समय के साथ-साथ उसने यौवन की दहलीज पर कदम रखा।

एक दिन मनोहर की पत्नी माधवी ने कहा, 'सुनो जी! लड़की अब सयानी हो गई है। इसके बारे में भी कुछ सोचा है आपने?'

मनोहर ने कहा, 'तुम चिंता क्यों करती हो भाग्यवान! हमारी बिटिया में क्या कमी है? वह सुंदर है, गुणवान है, बुद्धिमान है। इसका हाथ मांगने के लिए तो लड़के वालों की लाइन लग जाएगी ...तुम देखती रहना।'

लेकिन मां तो मां ही होती है। उसे बदलते समय का अनुभव भी था। वह जानती थी कि दहेज की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है और दहेज न देने पर तरह-तरह की घटने वाली दुर्घटनाओं से भी वह परिचित थी।

समय का चक्र निर्बाध गति से चलता रहा। रंजना ने शिक्षा भी पूरी कर ली। उसने बी.ए. प्रथम श्रेणी से पास करके घर में खुशियां ला दी थीं। लेकिन मां को तो बस एक ही चिंता थी—किसी भी तरह रंजना के हाथ पीले हो जाएं।

पिछले कुछ दिनों से मनोहर को भी रंजना की शादी की चिंता सताने लगी थी और वह योग्य वर की तलाश में जुट गया था। वह जहां भी जाता दहेज की मांग मुंह बाए खड़ी मिलती।

सीधा-सादा मनोहर दुनियादारी से अपरिचित था। उसने तो यही सोचा था कि उसकी लड़की की शादी उसके गुणों व रूप के कारण कहीं भी हो जाएगी। लेकिन जब वास्तविकता सामने आई तो वह भी हताश हो गया।

एक दिन मनोहर ऑफिस में अपनी सीट पर मुंह लटकाए बैठा

था। तभी उसका सहकर्मी धनसिंह उसके पास आया और पूछा, 'मनोहर क्या बात है? मुंह लटकाए क्यों बैठे हो? सबकुछ ठीक-ठाक तो है?'

मनोहर ने अपनी समस्या उसके सामने रखी तो वह बोला, आजकल मां वैभवलक्ष्मी के काफी चमत्कार सुनने में आ रहे हैं। चारों तरफ उन्हीं की जय-जयकार हो रही है। सुना है मां वैभवलक्ष्मी हर समस्या का समाधान चुटकियों में ही कर देती हैं। मेरा तो कहना है कि तुम भी उनकी शरण में चले जाओ। बिटिया के लिए योग्य वर खुद-ब-खुद तुम्हारे द्वार पर आ जाएगा।'

धनसिंह की बातों से मनोहर का विवेक जागा और उसने पत्नी सहित मां वैभवलक्ष्मी के 21 शुक्रवार तक व्रत रखने का संकल्प लिया।

व्रत के दिन पति-पत्नी मां का ही गुणगान करते और शाम को पूजन कर भोजन करते। इस तरह जब सातवें शुक्रवार का व्रत था, उसी दिन उसकी फर्म का मालिक सेठ दीनदयाल उसके घर पहुंचा। उन्हें देखकर पहले तो मनोहर चौंका, फिर आवभगत में जुट गया।

सेठ दीनदयाल ने मनोहर से कहा, 'मनोहर! बुरा न मानो तो एक बात कहूं?'

मनोहर ने कहा, 'आप भी कैसी बात करते हैं सेठजी। आप तो बस आदेश करें।'

सेठ दीनदयाल ने कहा, 'तुम्हारी बेटी रंजना मुझे और मेरे लड़के राजेश को बहुत पसंद है। मैं चाहता हूं कि इन दोनों की शादी कर दी जाए। तुम्हें कोई आपत्ति हो तो कहो।'

मनोहर को कानों सुने शब्दों पर विश्वास ही नहीं हुआ। अपनी प्रसन्नता को मन में दबाते हुए बोला, 'सेठजी! कहां आप राजा भोज के समान और कहां मैं गंगू तेली जैसा। आपके सामने मेरी हैसियत ही क्या है।'

श्री धनलक्ष्मी

हे धनलक्ष्मी मां! मैंने पूरे विधि-विधान से आपकी स्तुति की है, आप मेरे परिवार को धन-संपत्ति से परिपूर्ण करें।

सेठ दीनदयाल ने उसकी बात को भांपते हुए कहा, 'मनोहर! तुम किसी प्रकार की चिंता मत करो। यह शादी दहेज के बिना होगी। बस, मुझे तो रंजना जैसी गुणवान लड़की ही चाहिए।'

मनोहर और उसकी पत्नी माधवी ने इसे मां का ही चमत्कार माना और एक-दूसरे की तरफ देखते हुए स्वीकृति दे दी। फिर रंजना की शादी बड़ी धूमधाम से हुई जिसे देखकर सभी दंग रह गए।

शादी के बाद मनोहर और उसकी पत्नी ने 21 शुक्रवार के व्रत पूरे किए। व्रत के अंतिम दिन दोनों ने 21 कन्याओं को भोजन कराया तथा मां वैभवलक्ष्मी का विधिवत पूजन कर व्रतकथा की 21 पुस्तकें मां के श्रद्धालु भक्तों में बांटीं। मां की कृपा से मनोहर-माधवी सुखपूर्वक रहने लगे। इधर नौ माह बाद रंजना को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। यह सब मां के चमत्कारों की बदौलत ही संभव हो पाया।

❑❑

अथ श्री लक्ष्मी चालीसा

॥ दोहा॥

मातु लक्ष्मी करि कृपा,
करो हृदय में वास।
मनोकामना सिद्ध करि,
पुरवहु मेरी आस॥

॥ सोरठा॥

यही मोर अरदास,
हाथ जोड़ विनती करूं।
सब विधि करौ सुवास,
जय जननि जगदंबिका॥

॥ चौपाई॥

सिन्धु सुता मैं सुमिरों तोहि,
ज्ञान बुद्धि विद्या दे मोही।
तुम समान नहीं कोई उपकारी,
सब विधि पुरवहु आस हमारी॥
जै जै जै जननी जगदम्बा,
सबकी तुम ही हो अवलम्बा।
तुम हो सब घट-घट की वासी,
विनती यही हमारी खासी॥

हिरण्यवर्णां हरिणिं सुवर्णरजत स्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥

जगजननी जै सिन्धु कुमारी,
दीनन की तुम हो हितकारी।
बिनवौं नित्य तुमहिं महारानी,
कृपा करो जगजननी भवानी॥
केहि विधि स्तुति करौं तिहारी,
सुधि लीजै अपराध बिसारी।
कृपा दृष्टि चितवो मम ओरी,
जगजननी विनती सुन मोरी॥
ज्ञान बुद्धि जय सुख की दाता,
संकट हरो हमारी माता।
क्षीर सिन्धु जब विष्णु मथायो,
चौदह रत्न सिन्धु में पायो॥
चौदह रत्न में तुम सुख रासी,
सेवा कियो प्रभु बनि दासी।
जो जो जन्म प्रभु जहां लीना,
रूप बदल तहं सेवा कीन्हा॥
स्वयं विष्णु जब नरतनु धारा,
लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा।
तब तुम प्रगट जनकपुर माहीं,
सेवा कियो हृदय पुलकाहीं॥
अपनायो तोहि अन्तर्यामी,
विश्व विदित त्रिभुवन के स्वामी।
तुम सम प्रबल शक्ति नहिं आनि,
कहलौं महिमा कहौं बखानी॥

मन क्रम वचन करै सेवकाई,
मन इच्छित वांछित फल पाई।
तजि छल कपट और चतुराई,
पूजहिं विविध भांति मन लाई।।
और हाल मैं कहौं बुझाई,
जो यह पाठ करै मन लाई।
ताको कोई कष्ट न होई,
मन इच्छित वांछित फल पाई।।
त्राहि-त्राहि जय दुख निवारिणी,
त्रिविध ताप भवबंधन हारिणी।
जो यह पढ़े और पढ़ावै,
ध्यान लगाकर सुने सुनावै।।
ताको कोई रोग न सतावै,
पुत्रादि धन संपत्ति पावै।
पुत्रहीन अरू संपतिहीना,
अन्ध बधिर कोढ़ी अति दीना।।
विप्र बोलाय के पाठ करावै,
शंका दिल में कभी न लावै।
पाठ करावै दिन चालीसा,
तापर कृपा करें गौरीशा।।
सुख संपत्ति बहुत सी पावै,
कमी नहीं काहु की आवै।
प्रतिदिन पाठ करै जो पूजा,
तेहि सम धन्य और नहिं दूजा।।

प्रतिदिन पाठ करै मनमाहीं,
उन सम कोई जग में कहुं नाहीं।
बहुविधि क्या मैं करौं बड़ाई,
लेय परीक्षा ध्यान लगाई॥
करि विश्वास करै व्रत नेमा,
होय सिद्ध उपजै उर प्रेमा।
जै जै जै लक्ष्मी भवानी,
सब में व्यापित हो गुणखानी॥
तुम्हारो तेज प्रबल जग माहिं,
तुम सम कोउ दयालु कहुं नाहिं।
भूल चूक करि क्षमा हमारी,
दर्शन दीजै दशा निहारी॥
बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी,
तुमहिं अछत दुख सहते भारी।
नाहिं मोहि ज्ञान बुद्धि है मन में,
सब जानत हो अपने मन में॥
रूप चतुर्भुज करके धारण,
कष्ट मोर अब करहु निवारण।
केहि प्रकार मैं करौं बड़ाई,
ज्ञान बुद्धि मोहि नहिं अधिकाई॥

॥ दोहा॥

त्राहि-त्राहि दुख हारिणी, हरो बेगि सब त्रास।
जयति जयति जय लक्ष्मी, करो दुश्मन का नाश॥
रामदास धनि ध्यान नित, विनय करत कर जोर।
मातुलक्ष्मी दास पै करहु दया की कोर॥

श्री लक्ष्मीजी की आरती

जय लक्ष्मी माता जय-जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत हर विष्णु विधाता।
ब्रह्माणी, रुद्राणी, कमला तू ही जगमाता।
सूर्य, चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता।
दुर्गा रूप निरंजनी सुख संपति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत ऋद्धि-सिद्धि पाता।
तू ही पाताल बसंती तू ही शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशक जग निधि के त्राता।
जिस घर थारो वासा तिस घर में गुण आता।
कर सके सोई कर ले मन नहीं घबराता।
तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न कोई पाता।
खान-पान का वैभव तुम बिन नहीं आता।
शुभ गुण सुंदर मुक्ता क्षीर निधि जाता।
रत्न चतुर्दश तोकू कोई नहीं पाता।
श्री लक्ष्मीजी की आरती जो कोई नर गाता।
उर उमंग अति उपजे पाप उतर जाता।
स्थिर चर जगत रचाये शुभ कर्म नर लाता।
राम प्रताप मैया की शुभ दृष्टि चाहता।

श्री लक्ष्मी महिमा

श्री वैभवलक्ष्मी व्रत में आरती करने के बाद इस श्लोक को पढ़ने से शीघ्र फल मिलता है।

यत्राभ्यागवदानमान चरण प्रक्षालनं भोजन।
सत्सेवा पितृदेववार्चन विधिः सत्यं गवां पालनम्॥
धान्या नामपि सग्रहो न कलहश्चित्ता त्रिरूपा प्रिया।
दृष्टा प्रहा हरि वसामि कमला तस्मिन् गृहे निष्फला॥

भावार्थ

जहां मेहमान की आवभगत की जाती है...उसको भोजन कराया जाता है, जहां सज्जनों की सेवा की जाती है, जहां निरंतर श्रद्धा भाव से पितृ व भगवान की पूजा और अन्य धर्म कार्य किए जाते हैं, जहां सत्य का पालन किया जाता है, जहां दुष्कर्म नहीं होते, जहां गायों की रक्षा होती है, जहां दान देने के लिए धान्य का संग्रह किया जाता है, जहां क्लेश नहीं होता, जहां पत्नी संतोषी और संस्कारी होती है, ऐसी जगह पर मैं सदा निश्चल रहती हूं। इसके सिवा अन्य जगह पर कभी-कभार ही दृष्टि डालती हूं।

श्री वैभव लक्ष्मी व्रतकथा

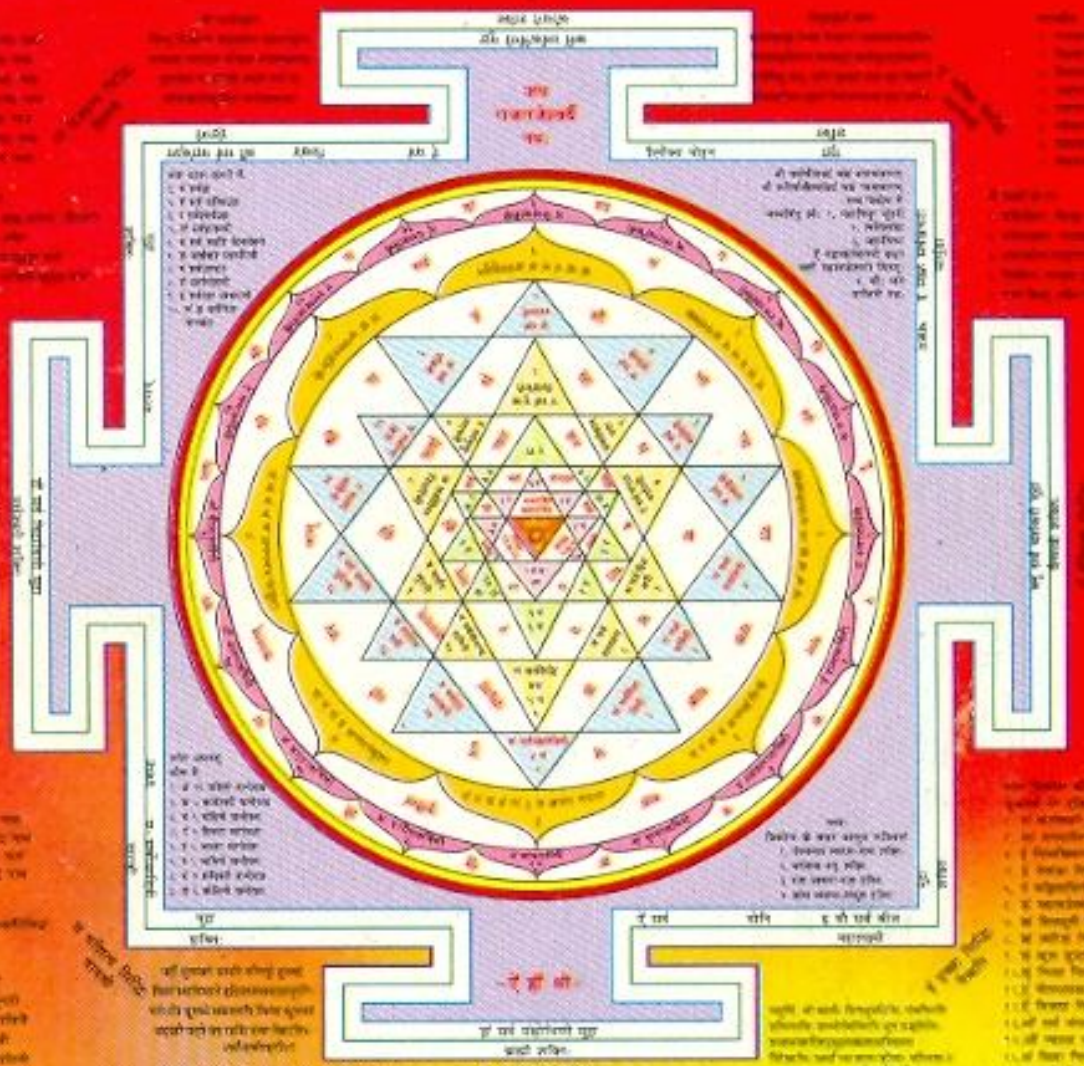

महालक्ष्मी को प्रिय इस अद्भुत श्रीयंत्र
का नित्य दर्शन करने से धन-धान्य की बहुलता रहती है
और सभी मंगलकामनाएं पूर्ण होती हैं।

मनोज पॉकेट बुक्स

a.h.w. raja series